*IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)*
*Volume 22, Issue 10, Ver. I (October. 2017) PP 95-100*
*e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.*
*www.iosrjournals.org*

# भारतीय किसान का समस्या और चुनौतियाँ

Dr.P.M. SHARMILA
*ASSOCIATE PROFESSOR, GOVERNMENT FIRST GRADE COLLEGE VIJAYNAGAR, BANGALORE-104, KARNATAKA*
*E-Mail: vidyasharmila@gmail.com*

***प्रस्तावना***

*हम जो भी भोजन करते हैं वह किसानों की वजह से उपलब्ध होता है। पूरे विश्व की जनसंख्या भोजन के लिए किसानों के ऊपर निर्भर करती है चाहे वह कोई भी देश हो। किसानों की वजह से ही हम इस ग्रह पर जीवन यापन कर पा रहे हैं। इस कारण से किसान दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक है। इतना अधिक योगदान देने के बाद भी किसानों की परिस्थितियां बिगड़ी हुई है। भारत में किसान को अन्नदाता कहा जाता है लेकिन आज तक बड़ी संख्या में किसानों की स्थिति दयनीय है। किसान भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। भारत की आधी से ज़्यादा आबादी आय के स्रोत के रूप में कृषि पर निर्भर है। किसान न केवल उद्योगों के लिए फ़ीडस्टॉक के रूप में भोजन, चारा और अन्य कच्चे माल उपलब्ध कराकर देश को सुरक्षित बनाते हैं, बल्कि वे भारतीय आबादी के अधिकांश लोगों के लिए आजीविका का स्रोत भी हैं। दुख की बात है कि हालांकि किसान पूरी आबादी को खाना खिलाते हैं, लेकिन कभी-कभी वे रात का खाना खाए बिना सो जाते हैं। भारतीय किसान अपने खेतों में काम करते हैं और उस खेत से कई प्रकार के अनाज फल सब्जियां उगाते हैं और उस अनाज और फल से सभी लोगों का पेट भरता है किसान दिन रात मेहनत करके अपने खेत और फसल की रखवाली और सेवा करता है जिससे उनका फसल और अच्छा हो। लगभग सभी किसान गांव में रहते हैं और सभी किसानों के पास बैल या ट्रैक्टर होता है जिससे खेत की जुताई की जाती है, पहले के समय में किसान बैल से ही सारा काम करते थे लेकिन आधुनिक समय में किसानों को थोड़ा राहत हुआ है। एक किसान रोज सूरज निकलने से पहले उठता है और अपने खेत की तरफ अपने अनाज को देखने के लिए चल देता है कि कहीं कोई नुकसान तो नहीं हो गया है क्योंकि किसानी में सबसे ज्यादा नुकसान ही होता है यहां पर सभी किसानों की मेहनत दांव पर लगी रहती है। हर किसान धरती मां को पूजता है, क्योंकि धरती मां उन्हें अन्न प्रदान करते हैं जिससे पूरे देश का पेट भरता है, अगर किसान खेतों में अनाज ना हुआ है तो पूरे भारत पर भुखमरी का संकट आ जाएगा।किसान अपने खेतों में कई तरह के फसल उगाते हैं जैसे कि गन्ना भान मटर प्याज आलू धनिया सब्जी बैगन टमाटर इत्यादि फल और सब्जियां उगाते हैं और जब फसल तैयार हो जाता है तो किसान उसे बाजार में बेच देता है और वहां से सभी लोग खरीद कर खाते हैं।*

## परिचय

किसान देश को जीवित रहने के लिए भोजन उपलब्ध कराने के लिए अथक परिश्रम करते हैं। वे बहुत कठिन परिश्रम करते हैं, लेकिन फिर भी उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे आधुनिक तकनीक तक पहुँच की कमी, मिट्टी की ख़राब गुणवत्ता, अपर्याप्त सरकारी सहायता आदि। ऐसी चुनौतियों के कारण किसानों में व्यापक संकट और गरीबी है। हालाँकि, अब सरकारें उनकी स्थिति को सुधारने के लिए पहल कर रही हैं, और इसलिए स्थिति में सुधार हो रहा है। फसल की पैदावार अब बेहतर है और इससे कई किसानों की आजीविका में सुधार हुआ है।मुझे लगता है कि हमारे देश के लिए किसान की भूमिका वैसी ही है जैसी मानव शरीर के लिए रीढ़ की हड्डी की होती है। समस्या यह है कि यह रीढ़ (हमारा किसान) कई समस्याओं से ग्रस्त है। कई बार तो उनमें से कई लोग दो वक्त का खाना भी नहीं जुटा पाते। तमाम कठिनाइयों के बावजूद वे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहते हैं। उनमें से कुछ के बारे में नीचे चर्चा की गई है।किसान देश की आत्मा हैं। भारत में लगभग दो तिहाई नौकरीपेशा वर्ग के लिए कृषि ही जीवनयापन का एकमात्र साधन है। किसान फसलें, दालें और सब्जियाँ उगाते हैं जिनकी सभी को ज़रूरत होती है। वे बहुत मेहनत करते हैं ताकि हम हर दिन अपनी मेज़ पर खाना रख सकें। इसलिए, जब भी हम खाना खाते हैं या खाते हैं, तो हमें किसान का शुक्रिया अदा करना चाहिए।कृषि अर्थव्यवस्था का एक मूलभूत हिस्सा है, खासकर उन देशों में जहाँ आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपनी आजीविका के लिए खेती पर निर्भर है। किसानों पर निबंध छात्रों को कृषि के आर्थिक प्रभाव को समझने में मदद करते हैं। इसके अलावा छात्र खाद्य उत्पादन में शामिल प्रक्रियाओं,

किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों और टिकाऊ खेती के तरीकों के महत्व के बारे में भी सीखते हैं। किसानों की भूमिका को समझने से छात्रों को कृषि से जुड़ी सांस्कृतिक परंपराओं और मूल्यों को समझने में भी मदद मिलती है

**भारतीय किसान का महत्व**

- **वे देश के खाद्य उत्पादक हैं**

1970 के दशक के अंत से पहले भारत अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त खाद्यान्न उत्पादन करने में सक्षम नहीं था। दूसरे शब्दों में, भारत खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर नहीं था। हम विदेशों से (मुख्य रूप से अमेरिका से) बड़ी मात्रा में खाद्यान्न आयात करते थे। कुछ समय तक तो यह ठीक रहा, लेकिन उसके बाद अमेरिका ने व्यापार के मामले में हमें ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया।

उन्होंने खाद्यान्न की आपूर्ति पूरी तरह से बंद करने की धमकी भी दी। तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने इस चुनौती को स्वीकार किया और "जय जवान, जय किसान" का नारा दिया और कुछ कठोर कदम उठाए, जिसके परिणामस्वरूप हरित क्रांति हुई और उसके कारण हम खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर हो गए और अधिशेष उपज का निर्यात भी करने लगे।

तब से भारत ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। हमारे किसानों ने कभी हमें निराश नहीं किया, भले ही उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हो। वे बढ़ती आबादी की मांग को पूरा करने में सक्षम हैं।

- **भारतीय अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ा योगदानकर्ता**

भारतीय अर्थव्यवस्था में किसानों का योगदान करीब 17 प्रतिशत है। इसके बाद भी वे गरीबी में जी रहे हैं। इसके कई कारण हैं। अगर हम विभिन्न बाधाओं को दूर करने में सफल हो जाएं तो इस प्रतिशत में सुधार की अच्छी संभावना है।

- **सभी किसान स्वरोजगार में लगे हुए हैं**

किसान रोजगार के लिए किसी अन्य स्रोत पर निर्भर नहीं हैं। वे स्वयं भी रोजगार करते हैं और दूसरों के लिए भी रोजगार पैदा करते हैं।

**निष्कर्ष**

आजादी के बाद से हम बहुत आगे बढ़ चुके हैं, लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। मुझे यकीन है कि अगर हम ईमानदारी से काम करेंगे, तो हम आज जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं, उन पर काबू पा सकेंगे और भगवान की इच्छा से हमारे गांव उतने ही सुंदर और समृद्ध बनेंगे, जितने बॉलीवुड फिल्मों में दिखाए जाते हैं।

भारतीय किसान का जीवन पर निबंध – निबंध 3 (400 शब्द)

**भरतीय किसान का जीवन**

एक दिन मैंने अपने पिता से कहा, "इन गाँव के लोगों का जीवन कितना बढ़िया है..."। इस पर मेरे पिता जोर से हंसे और मुझे लखनऊ में हमारे पैतृक गाँव में जाने का सुझाव दिया। पिछली बार जब मैं अपने गाँव गया था, तब मैं 4 साल का था। मुझे अपनी पिछली यात्रा के बारे में बहुत कम जानकारी याद है या यूँ कहें कि मुझे बिल्कुल भी नहीं पता था कि गाँव कैसा दिखता है।

मैंने ऑफिस से एक हफ़्ते की छुट्टी ली और अपने पिता के साथ ट्रेन में सवार हो गया। मैं वाकई बहुत उत्साहित था। रेलवे स्टेशन पर हमारा स्वागत हमारे रिश्तेदार (मेरे चचेरे भाई) ने किया जो हमें लेने आए थे। मैंने उनसे पूछा, "हम घर कैसे जाएँगे"? इस पर उन्होंने अपनी बैलगाड़ी दिखाई। इस पर मेरी प्रतिक्रिया थी, "क्या!"। मेरे पिता ने मुझसे कहा, "बेटा, यह तो बस शुरुआत है..."।

घर पहुँचते ही मैंने सबसे पहले अपने स्वभाव की पुकार का जवाब देने का फैसला किया। इसलिए, मैंने पूछा, "शौचालय कहाँ है?" इस पर मुझे एक खुले मैदान में ले जाया गया। मुझे बताया गया कि गाँव में कोई शौचालय नहीं है और महिलाओं सहित सभी ग्रामीणों को खुले मैदान में जाना पड़ता है। उसके बाद मैंने चारों ओर देखने का फैसला किया। मैंने देखा कि मिट्टी और

बांस से बने टूटे-फूटे घर हैं, जिनमें पुराने और फटे कपड़े (निश्चित रूप से डिजाइनर नहीं) पहने हुए पुरुष और महिलाएँ अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए खेतों में बहुत मेहनत कर रहे हैं।

हर घर में एक इस्तेमाल किया हुआ हल और एक जोड़ी कमज़ोर बैल मौजूद है जो निवासियों के कठिन जीवन का प्रमाण है। ज़्यादातर घरों में बिजली का कनेक्शन नहीं था और जिन घरों में बिजली का कनेक्शन था भी, उनमें तेल के दीये जलते थे क्योंकि बिजली दुर्लभ थी। किसी के पास गैस कनेक्शन नहीं था, इसलिए खाना लकड़ी या कोयले की आग पर पकाया जाता था जिससे धुआँ निकलता था और उससे कई तरह की फेफड़ों की बीमारियाँ होती थीं।

मुझे एक बूढ़ी औरत खाँसती हुई मिली। मैंने उससे पूछा, "क्या तुम दवाएँ ले रही हो?" इस पर उसने एक खाली नज़र डाली और कहा, "बेटा, मेरे पास दवाएँ खरीदने या किसी निजी अस्पताल में जाने के लिए पैसे नहीं हैं।" दूसरे लोगों ने मुझे बताया कि आस-पास कोई सरकारी क्लिनिक नहीं है। यह सुनकर मैं वाकई भावुक हो गया। भारतीय किसानों की दुर्दशा अकल्पनीय है क्योंकि वे बुनियादी ज़रूरतों के अभाव में पूरे साल अथक परिश्रम करते हैं।

मैंने अपने चचेरे भाई के साथ जाने का फैसला किया जो खेतों में काम कर रहा था। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मैंने पाया कि वह और कुछ अन्य किसान कुछ लोगों से बहस कर रहे थे। मुझे बताया गया कि वे बैंक अधिकारी थे और किसानों को (EMI का भुगतान न करने का) औपचारिक नोटिस देने आए थे। मेरे चचेरे भाई ने मुझे बताया कि इस बार गाँव में कोई भी EMI का भुगतान नहीं कर पाया क्योंकि इस बार उनकी फसल खराब हुई थी।

मैंने खाना खाया और सो गया। कुछ देर बाद मैं पानी पीने के लिए उठा। मैंने देखा कि बंटू (मेरे चचेरे भाई का बेटा) मोमबत्ती की रोशनी में पढ़ रहा था। मैंने पूछा, "रात हो गई है, सो जाओ"। इस पर उसने कहा, "अंकल, कल मेरा टेस्ट है"। यह सुनकर मुझे लगा कि सब कुछ खत्म नहीं हुआ है और अभी भी उम्मीद की किरण बाकी है।

भारतीय किसानों के समक्ष चुनौतियाँ
भारतीय अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका के बावजूद किसानों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी ही एक बड़ी चुनौती है ऋण तक पहुँच की कमी। भारतीय किसानों के एक बड़े हिस्से के पास आधुनिक कृषि तकनीकों में निवेश करने के लिए वित्तीय संसाधन नहीं हैं। इसलिए, उन्हें साहूकारों से ऋण लेने के लिए मजबूर होना पड़ता है जो असाधारण ब्याज दरें वसूलते हैं जिससे उन्हें चुकाना मुश्किल हो जाता है।

एक और बड़ी चुनौती आधुनिक तकनीक की कमी है। भारत में अधिकांश किसानों को अभी भी पारंपरिक और पुरानी खेती के तरीकों पर निर्भर रहना पड़ता है। इसके अलावा, उन्हें जल प्रबंधन और सिंचाई से जुड़ी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। देश के कई क्षेत्रों में, वे अपनी फसलों के लिए मानसून पर निर्भर हैं, जो काफी अप्रत्याशित हो सकता है और इसलिए, फसल विफलताओं का कारण बन सकता है।

**भारतीय किसानों की मूल समस्याएं**

- भूमि पर अधिकार देश में कृषि भूमि के मालिकाना हक को लेकर विवाद सबसे बड़ा है. ...
- फसल पर सही मूल्य किसानों की एक बड़ी **समस्या** यह भी है कि उन्हें फसल पर सही मूल्य नहीं मिलता. ...
- अच्छे बीज ...
- सिंचाई व्यवस्था ...
- मिट्टी का क्षरण ...
- मशीनीकरण का अभाव ...
- भंडारण सुविधाओं का अभाव ...
- परिवहन भी एक बाधा

1. फ़सल पर सही मूल्य

किसानों की एक बड़ी समस्या यह भी है कि उन्हें फसल पर सही मूल्य नहीं मिलता। वहीं किसानों को अपना माल बेचने के तमाम कागजी कार्यवाही भी पूरी करनी पड़ती है। मसलन कोई किसान सरकारी केंद्र पर किसी उत्पाद को बेचना चाहे तो उसे गांव के अधिकारी से एक कागज चाहिए होगा। ऐसे में कई बार कम पढ़े-लिखे किसान औने-पौने दामों पर अपना माल बेचने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

. 2 अच्छे बीज

अच्छी फसल के लिए अच्छे बीजों का होना बेहद जरूरी है। लेकिन सही वितरण तंत्र न होने के चलते छोटे किसानों की पहुंच में ये महंगे और अच्छे बीज नहीं होते हैं। इसके चलते इन्हें कोई लाभ नहीं मिलता और फसल की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

**3** सिंचाई व्यवस्था

भारत में मॉनसून की सटीक भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। इसके बावजूद देश के तमाम हिस्सों में सिंचाई व्यवस्था की उन्नत तकनीकों का प्रसार नहीं हो सका है। उदाहरण के लिए पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में सिंचाई के अच्छे इंतजाम है लेकिन देश का एक बड़ा हिस्सा ऐसा भी है जहां कृषि, मॉनसून पर निर्भर है। इसके इतर भूमिगत जल के गिरते स्तर ने भी लोगों की समस्याओं में इजाफा किया है।

4. मिट्टी का क्षरण

तमाम मानवीय कारणों से इतर कुछ प्राकृतिक कारण भी किसानों और कृषि क्षेत्र की परेशानी को बढ़ा देते हैं। दरअसल उपजाऊ जमीन के बड़े इलाकों पर हवा और पानी के चलते मिट्टी का क्षरण होता है। इसके चलते मिट्टी अपनी मूल क्षमता को खो देती है और इसका असर फसल पर पड़ता है।

5. मशीनीकरण का अभाव

कृषि क्षेत्र में अब मशीनों का प्रयोग होने लगा है लेकिन अब भी कुछ इलाके ऐसे हैं जहां एक बड़ा काम अब भी किसान स्वयं करते हैं। वे कृषि में पारंपरिक तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। खासकर ऐसे मामले छोटे और सीमांत किसानों के साथ अधिक देखने को मिलते हैं। इसका असर भी कृषि उत्पादों की गुणवत्ता और लागत पर साफ नजर आता है।

6. भंडारण सुविधाओं का अभाव

भारत के ग्रामीण इलाकों में अच्छे भंडारण की सुविधाओं की कमी है। ऐसे में किसानों पर जल्द से जल्द फसल का सौदा करने का दबाव होता है और कई बार किसान औने-पौने दामों में फसल का सौदा कर लेते हैं। भंडारण सुविधाओं को लेकर न्यायालय ने भी कई बार केंद्र और राज्य सरकारों को फटकार भी लगाई है लेकिन जमीनी हालात अब तक बहुत नहीं बदले हैं।

7 परिवहन भी एक बाधा

भारतीय कृषि की तरक्की में एक बड़ी बाधा अच्छी परिवहन व्यवस्था की कमी भी है। आज भी देश के कई गांव और केंद्र ऐसे हैं जो बाजारों और शहरों से नहीं जुड़े हैं। वहीं कुछ सड़कों पर मौसम का भी खासा प्रभाव पड़ता है। ऐसे में, किसान स्थानीय बाजारों में ही कम मूल्य पर सामान बेच देते हैं। कृषि क्षेत्र को इस समस्या से उबारने के लिए बड़ी धनराशि के साथ-साथ मजबूत राजनीतिक प्रतिबद्धता भी चाहिए।

8. संतुलित खेती के अभाव
बहुत से किसान एक ही फसल की खेती करते हैं जो समय-समय पर उन्हें नुकसान पहुंचा सकती है। इसके अलावा, संतुलित खेती के लिए सही जमीन की उपलब्धता कम होने के कारण, यह समस्या और भी अधिक होती है।

9. कृषि सहायता व आर्थिक सहायता के अभाव
किसानों को विभिन्न सरकारी योजनाओं और सहायता के बारे में सही जानकारी नहीं होती जिससे वे उनके लाभ का हिस्सा नहीं बन पाते। उन्हें आर्थिक सहायता की भी आवश्यकता होती है जो उनकी खेती में नुकसान को दूर करती है।

10 जलवायु परिवर्तन
वर्तमान में भारत में जलवायु परिवर्तन के कारण सूखा और बाढ़ की समस्या होती है जो खेती को प्रभावित करती है। किसानों को उन्नत तकनीकों और जल संचय तंत्रों का उपयोग करना अत्यावश्यक होगा।

11 ध्यान कमी और सरकार की उपेक्षा
भारतीय किसानों को समस्या से जूझने में मुश्किल होती है क्योंकि सरकार द्वारा उनकी आवश्यकताओं पर ध्यान नहीं दिया जाता है। बहुत से किसान धारिक नहीं होते हैं जो उन्हें सरकारी सहायता का हिस्सा नहीं बनाते हैं।

12 भूमि के अधिकार
बहुत से किसानों को उनकी खेती करने के लिए अपनी जमीन की समस्या से जूझनी पड़ती है। उन्हें अपनी जमीन के अधिकार के बारे में सही जानकारी नहीं होती, जिससे वे अपने अधिकारों का भुगतान नहीं कर पाते हैं।

किसानों की हालत

भारतीय किसान गरीब है। उनकी गरीबी पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। किसान को दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं हो पाता। उन्हें मोटे कपड़े का एक टुकड़ा नसीब नही हो पाता है। वह अपने बच्चों को शिक्षा भी नहीं दे पाते। वह अपने बेटे और बेटियों का ठीक पोशाक तक खरीद कर नहीं दे पाते। वह अपनी पत्नी को गहने पहनने का सुख नहीं दे पाते। किसान की पत्नी कपड़े के कुछ टुकड़े के साथ प्रबंधित करने के लिए है। वह भी घर पर और क्षेत्र में काम करती है। वह गौशाला साफ करती, गाय के गोबर बनाकर दिवारो पर चिपकाती और उन्हें धूप में सूखाती। वह गीले मानसून के महीनों के दौरान ईंधन के रूप में उपयोग होता। भारतीय किसान को गांव के दलालों द्वारा परेशान किया जाता है। वह साहूकार और कर संग्राहकों से परेशान रहते इसलिए वह अपने ही उपज का आनंद नहीं कर पाते हैं। भारतीय किसान के पास उपयुक्त निवास करने के लिए घर नहीं होता। वह भूसे फूस की झोपड़ी में रहते है। उसका कमरा बहुत छोटा है और डार होता। जबकी बड़े किसानों का बहुत सुधार हुआ है, छोटे भूमि धारकों और सीमांत किसानों की हालत अब भी संतोषजनक से भी कम है।

पुराने किसानों की अधिकांश अनपढ़ आदि ज्यादा पढी-लिखी नहीं थी लेकिन नई पीढ़ी के अधिकतर किसान शिक्षित हैं। उनके शिक्षित होने के नाते उन्हें बहुत मदद मिलती है। वे प्रयोगशाला में अपने खेतों की मिट्टी का परीक्षण करवा लेते है। इस प्रकार, वे समझ जाते की उनके क्षेत्रों में सबसे ज्यादा फसल किसकी होगी। भारतीय किसान सरल संभव तरीके से सामाजिक समारोह मनाता है। वह हर साल त्योहार धूम से मनाते है। वह अपने बेटे और बेटियों की शादी का जश्न भी धूम से मनाते। वह अपने परिजनों और दोस्तों और पड़ोसियों के मनोरंजन भी करने में कसर नहीं छोडते।

भारतीय किसानों का जीवन सुधारने के उपाय

किसानों की मॉग मुफ्त बिजली और पानी नहीं है, बल्कि बिजली की निर्बाध आपूर्ति के लिए हैं जिसके लिये वे भुगतान करने के लिए तैयार है। पंजाब जैसे राज्यों में, पहली बार में हरित क्रांति से किसानों को बहुत मदद मिली लेकिन कम कीमतों मैं बम्पर फसलों की उपज के कारण उनके काम मैं बधाओ ने आना शुरु कर दिया। भारतीय किसानों की हालत में सुधार किया जाना चाहिए। उन्हे खेती की आधुनिक विधि सिखाया जाना चाहिए। उन्हे साक्षर बनाया जाना चाहिए। उनको पढा लिखा बनाना चाहिए। वह हर संभव तरीके में सरकार द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए। छोटे किसानों ने भी कुछ कुटीर उद्योग शुरू करने का निर्णय ले लिया। फसल चक्र प्रणाली और अनुबंध फसल प्रणाली कुछ राज्यों में शुरू कर दिया गया। इस तरह के कदम किसानो को सही दिशा में ले जाते और लंबे समय तक किसानी करने में मदद करते। भारत का कल्याण किसानो पर ही निर्भर करता है।

**निष्कर्ष**

हमारे गांव और किसान वैसे नहीं हैं जैसा मैंने सोचा था, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन यह गांव वैसा ही बन जाएगा जैसा बॉलीवुड फिल्मों में दिखाया जाता है।

भारतीय किसान की भूमिका पर निबंध – निबंध 4 (500 शब्द)

**परिचय**

भारत की संस्कृति विविधतापूर्ण है। भारत में लगभग 22 प्रमुख भाषाएँ और 720 बोलियाँ बोली जाती हैं। यहाँ हिंदू, इस्लाम, ईसाई, सिख जैसे सभी प्रमुख धर्मों के लोग रहते हैं। यहाँ के लोग हर तरह के व्यवसाय में लगे हुए हैं, लेकिन यहाँ का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यही कारण है कि भारत को " **कृषि प्रधान देश** " भी कहा जाता है।

## भारतीय किसान की भूमिका

यही कारण है कि हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। यह कहना गलत नहीं होगा कि किसान हमारे देश की रीढ़ हैं और साथ ही, वे भारतीय अर्थव्यवस्था के पीछे प्रेरक शक्ति हैं। फिर भी भारतीय किसानों के साथ सब कुछ ठीक नहीं है। वे गरीबी और दुख का जीवन जी रहे हैं। फिर भी वे राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसानों की कुछ महत्वपूर्ण भूमिकाओं पर नीचे चर्चा की गई है।

- **खाद्य सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा है**

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भोजन जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। यही कारण है कि पुराने समय में किलों में बड़ी मात्रा में खाद्यान्न संग्रहित किया जाता था, ताकि युद्ध के समय जब दुश्मन द्वारा बाहरी आपूर्ति रोक दी जाए, तब भी खाने के लिए भोजन उपलब्ध रहे। यही तर्क आज भी लागू होता है। चूँकि हम खाद्यान्न के मामले में "आत्मनिर्भर" हैं, इसलिए कोई भी देश हमें ब्लैकमेल या धमकी नहीं दे सकता। यह केवल हमारे किसानों की मेहनत के कारण ही संभव हुआ है।

- **भारतीय अर्थव्यवस्था के चालक**

भारतीय अर्थव्यवस्था में किसानों का योगदान लगभग 17% है। 2016-17 में भारतीय कृषि निर्यात लगभग 33 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

## भारतीय किसानों के साथ सब कुछ ठीक नहीं है

कोई उम्मीद कर सकता है कि निर्यात के मूल्य के कारण भारतीय किसान समृद्ध होंगे, लेकिन वास्तविकता इसके ठीक विपरीत है। वे आत्महत्या कर रहे हैं, पेशे को छोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं और दिन में दो वक्त की रोटी भी नहीं जुटा पा रहे हैं।

ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिन्हें दोषी ठहराया जाना चाहिए, लेकिन एक बात तो तय है कि यदि समस्या जारी रही तो हम जल्द ही "खाद्य निर्यातक देश" से "खाद्य आयातक देश" बन जाएंगे, जो कि हम अभी हैं।

बड़े पैमाने पर आंदोलन और किसानों की आत्महत्या के कारण किसानों की समस्याओं का मुद्दा उजागर हुआ है, लेकिन "क्या हम पर्याप्त काम कर रहे हैं"? यह एक बड़ा सवाल है जिसका हमें जवाब देना होगा। जब हमारे "अन्नदाता" आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो रहे हैं, तो यह वाकई चिंता की बात है।

## निष्कर्ष

अंत में मैं केवल इतना कहना चाहूंगी कि, अब समय आ गया है कि हमें तत्काल कुछ करना होगा अन्यथा चीजें निश्चित रूप से बदतर हो जाएंगी।ग्रामीण भारत में बदलाव तो हो रहा है, लेकिन अभी भी इसमें बहुत कुछ करना बाकी है। किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों से लाभ तो मिला है, लेकिन विकास समान नहीं है। किसानों का शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन रोकने का प्रयास होना चाहिए। कृषि को सफल और लाभदायक बनाने के लिए यह जरूरी है कि सीमांत और छोटे किसानों की स्थिति में सुधार पर उचित जोर दिया जाए।

## References

[1]. Jump up to:[a] [b] Brass, Tom (1995). New Farmers' Movements in India. Vol. 12. Frank Cass. p. 201. ISBN 0-7146-4609-1.

[2]. "Bharatiya Kisan Union backs Tamil Nadu farmers protesting with human skulls in New Delhi – Via Campesina". Via Campesina. 28 March 2017.

[3]. "BKU leader Mahendra Singh Tikait dead". India Today. 15 May 2011.

[4]. Kochanek, Stanley A.; Hardgrave, Robert L. (2007). India: Government and Politics in a Developing Nation. Cengage Learning. p. 255. ISBN 978-0495007494.

[5]. Jump up to:[a] [b] Dhanagare, D. N (2016). Populism and Power: Farmers' movement in western India, 1980–2014. India: Routledge. p. 130. ISBN 978-1-138-96327-6.

[6]. Jump up to:[a] [b] Omvedt, Gail (1993). Reinventing Revolution: New Social Movements and the Socialist Tradition in India. M. E. Sharpe. p. 122. ISBN 0-87332-784-5.

[7]. Bentall, Jim; Corbridge, Stuart (1996). "Urban-Rural Relations, Demand Politics and the 'New Agrarianism' in Northwest India: The Bharatiya Kisan Union". Transactions of the Institute of British Geographers. 21 (1): 30. doi:10.2307/622922. JSTOR 622922.